कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



1. चर्चा करें –
1921 में असहयोग आंदोलन में शामिल होने वाले सभी सामाजिक समूहों की सूची बनाइये। इसके बाद इनमें से किन्हीं तीन को चुन कर उनकी आशाओं और संघर्षों के बारे में लिखते हुए यह दर्शाइये कि वे आंदोलन में शामिल क्यों हुए?

उत्तर : असहयोग आंदोलन जनवरी 1921 में शुरू हुआ।
इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने भाग लिया। जैसे –

1. शहरी मध्य वर्ग जिसमें विद्यार्थी, शिक्षक, हैडमास्टर और वकील भी शामिल थे।
2. किसान (मुख्य रूप से अवध के किसान)
3. आदिवासी (आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों के आदिवासी किसान)
4. बागानी मजदूर
5. व्यापारी
6. श्रमिक
7. महिलाऐं

1. शहरी मध्यवर्गीय समूह :–

- आंदोलन की शुरूआत शहरी मध्य वर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई।
- हजारों विद्यार्थियों ने स्कूल कॉलेज छोड़ दिये।
- हैड मास्टरों और शिक्षकों ने इस्तीफे सौंप दिये।
- वकीलों ने मुकदमे लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास के अलावा ज्यादातर प्रांतों में विधायी परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया।
- विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया।
- शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई।
- विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी। जिससे विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया।
- 1921–22 के बीच यह 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गया।
- व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने से इंकार कर दिया।

2. अवध के किसानों द्वारा :–

- शहरों से बढ़कर यह आंदोलन देहात में भी फैल गया।
- अवध में संन्यासी बाबा रामचंद्र किसानों का नेतृत्व कर रहे थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- उनका आंदोलन जमींदारों के खिलाफ था जो किसानों से भारी भरकम लगान तथा कर वसूल रहे थे।
- किसानों को बेगार भी करनी पड़ती थी।
- जमीनों पर किसानों के अधिकार स्थापित न हो सके। इसलिए बार-बार उनकी जमीनों के पट्टे बदल दिये जाते थे।
- किसानों की मांग थी कि -

1. लगान कम किया जाये।
2. बेगार खत्म हो।
3. दमनकारी जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार हो।

- इसके लिए पंचायतों ने जमींदारों को नाई-धोबी की सुविधाओं से वंचित करने के फैसले किये।
- जून 1920 में जवाहर लाल नेहरू ने अवध के गाँवों का दौरा कर गाँव वालों से बातचीत की और उनकी व्यथा सुनी।
- अक्टूबर 1920 तक जवाहर लाल नेहरू, बाबा रामचंद्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में किसान सभा का गठन किया।
- महीने भर में इस पूरे इलाके के गाँवों में संगठन की 300 से ज्यादा शाखाऐं बन चुकी थीं।
- अगले वर्ष जब असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तो कांग्रेस ने अवध के किसान संघर्ष को इस आंदोलन में शामिल करने का प्रयास किया।

3. बागानी मजदूर :-

- असम के बागानी मजदूरों के लिए आजादी का मतलब यह था कि वे उस चारदीवारियों से जब चाहें आ-जा सकें जिनमें उनको बंद करके रखा गया था।
- उनके लिए आजादी का मतलब ये भी था कि वे अपने गाँवों से संपर्क रख सकें।
- इसका कारण 1859 का -

''इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट'' था।

- जिसके तहत उन्हें बागानों से बाहर जाने की छूट नहीं थी।
- जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो अपने अधिकारियों की अवहेलना कर बागान छोड़ कर घर जाने लगे।
- उनको लगता था कि अब गाँधी राज आ गया है। इसलिए हरेक को गाँव में जमीन मिल जायेगी।
- यद्यपि वे अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच पाये।
- रेलवे व जहाजों की हड़ताल होने के कारण वे रास्ते में ही फंसे रह गये।
- उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई की गई।
- इस प्रकार से विभिन्न वर्गों के लोगों ने गाँधीजी का नाम का नारा लगाकर स्वतंत्र भारत की हुंकार भरी।
- इस प्रकार से अनेक वर्गों के लोग असहयोग आंदोलन में शामिल हुए।

2. नमक यात्रा की चर्चा करते हुए स्पष्ट करें कि यह उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का एक असरदार प्रतीक था।

उत्तर : नमक पर कर को महात्मा गाँधी ब्रिटिश सरकार का सबसे दमनकारी पहलू मानते थे।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- नमक का अमीर-गरीब सभी इस्तेमाल करते थे क्योंकि यह भोजन का एक अभिन्न हिस्सा था।
- 31 जनवरी 1930 को गाँधीजी ने वायसराय इरविन को एक खत लिखा जिसमें 11 माँगे थीं।
- यद्यपि इसमें सभी वर्गों की माँगे थीं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण माँग नमक-कर को खत्म करने की थी।
- महात्मा गाँधी का यह पत्र एक अल्टीमेटम की तरह था जिसमें उन्होंने लिखा था कि अगर 11 मार्च तक उनकी माँगे नहीं मानी गई तो कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ देगी।
- इरविन झुकने को तैयार नहीं थे।
- फलस्वरूप गाँधी जी ने अपने 78 विश्वस्त सहयोगियों के साथ नमक यात्रा शुरू कर दी।
- यह यात्रा साबरमती में गाँधी जी के आश्रम से प्रारम्भ होकर 240 मील दूर दांडी नामक समुद्र तटीय कस्बे तक जानी थी।
- गाँधीजी की टोली ने 24 दिन तक हर रोज लगभग 10 मील का सफर तय किया।
- गाँधीजी जहाँ भी रूकते हजारों लोग उन्हें सुनने आते।
- इन सभाओं में गाँधीजी ने स्वराज का अर्थ स्पष्ट किया और कहा कि लोग अंग्रेजों की शांतिपूर्वक अवज्ञा करें। यानि अंग्रेजों का कहा न मानें।
- 6 अप्रैल 1930 को वे दांडी पहुँचे और उन्होंने समुद्र का पानी उबालकर नमक बनाना शुरू कर दिया। यह कानून का उल्लंघन था।
- यहीं से सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हो गया।
- देश के विभिन्न भागों में हजारों लोगों ने नमक कानून तोड़ा तथा सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किया।
- अनेक प्रकार से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाने लगा।
- शराब की दुकानों की पिकेटिंग की जाने लगी।

ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार करना प्रारम्भ किया।

- अप्रैल 1930 में अब्दुल गफ्फार खान को तथा अगले माह गाँधीजी को गिरफ्तार किया गया।
- गुस्साई भीड़ सड़कों पर उतर आई तथा ब्रिटिश शासन के प्रतीकों पर हमले शुरू कर दिये।
- भयभीत सरकार ने दमन का रास्ता अपनाया।
- शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमले किये।
- औरतों व बच्चों को मारा पीटा गया तथा लगभग 1 लाख लोगों को गिरफ्तार कर लिया।
- तब महात्मा गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया।

3. कल्पना कीजिए कि आप सिविल नाफरमानी आंदोलन में हिस्सा लेने वाली महिला है। बताइये कि इस अनुभव का आपके जीवन में क्या अर्थ होता।

उत्तर : सिविल नाफरमानी आंदोलन (सविनय अवज्ञा आंदोलन) में महिलाओं ने बड़े पैमाने पर भाग लिया था।

- गाँधीजी के नमक सत्याग्रह के दौरान हजारों औरतें उनकी बात सुनने घर से बाहर आ जाती थीं।
- महिलाओं ने जुलूसों में हिस्सा लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों व शराब की दुकानों की पिकेटिंग की।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- बहुत सारी महिलाऐं जेल भी गईं।
- शहरों में ऊँची जातियों की महिलाऐं सक्रिय थी। जबकि ग्रामीण इलाकों में सम्पन्न किसान परिवारों की महिलाऐं आंदोलन में हिस्सा ले रही थीं।
- गाँधीजी के आह्वान के बाद महिलाओं को राष्ट्र की सेवा करना अपना पवित्र कर्त्तव्य लगने लगा था।
- यद्यपि सार्वजनिक जीवन में आ जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति में कोई भारी बदलाव नहीं आया क्योंकि गाँधीजी का मानना था कि औरतों का असली कर्त्तव्य घर चलाना ही है।
- इसलिए लंबे समय तक कांग्रेस, संगठन में किसी महिला को महत्वपूर्ण पद देने से हिचकिचाती रही।
- कांग्रेस को तो उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति में ही दिलचस्पी थी।

4. राजनीतिक नेता पृथक निर्वाचिका के सवाल पर क्यों बँटे हुए थे?

उत्तर : कुछ वर्गों के राजनीतिक नेता पृथक निर्वाचिका के सवाल पर बँटे हुए थे। जैसे –

दलित :-

- कांग्रेस ने लंबे समय तक दलितों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि कांग्रेस रूढ़ीवादी सवर्ण हिन्दुओं से डरी हुई थी।
- दलित नेता अपने समुदाय की समस्याओं का अलग राजनीतिक हल ढूँढना चाहते थे।
- वे खुद को संगठित करने लगे।
- उन्होंने शिक्षण संस्थाओं में आरक्षण के लिए आवाज उठाई तथा पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की माँग की जहाँ से केवल दलित ही विधायी परिषदों में चुनकर जा सकें।
- उनका मानना था कि उनकी सामाजिक अपंगता केवल राजनीतिक सशक्तिकरण से ही दूर हो सकती है।
- इसलिए सविनय अवज्ञा आंदोलन में दलितों की भागीदारी काफी सीमित ही थी।
- डॉ. अम्बेडकर ने 1930 में दलितों को संगठित करने के लिए 'दमित वर्ग एसोसिएशन' बनाया।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन में जब ब्रिटिश सरकार ने दलितों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की अंबेडकर की बात मान ली तो गाँधीजी आमरण अनशन पर बैठ गये।
- गाँधीजी का मानना था कि इससे समाज के एकीकरण की प्रक्रिया धीमी पड़ जायेगी।
- आखिरकार अंबेडकर ने गाँधीजी की राय मान ली और सितम्बर 1932 में पूना-पैक्ट पर हस्ताक्षर कर दिये।
- इस पूना-पैक्ट से दलितों को प्रांतीय एवं केन्द्रीय विधायी परिषदों में आरक्षित सीटें मिल गई।
- फिर भी दलित आंदोलन कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को शंका की दृष्टि से देखता रहा।

मुस्लिम :-

- असहयोग-खिलाफत आंदोलन के शांत पड़ जाने के बाद मुसलमानों का एक बहुत बड़ा तबका कांग्रेस से कटा हुआ महसूस करने लगा था।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने 1927 में गठबंधन का प्रयास किया और ऐसा लगा कि अब एकता स्थापित हो ही जायेगी।
- सबसे महत्वपूर्ण मतभेद प्रतिनिधित्व के सवाल पर थे।
- मुस्लिम लीग के मोहम्मद अली जिन्ना का कहना था कि –

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- मुस्लिमों को केन्द्रीय सभा में आरक्षित सीटें दी जाये।
- मुस्लिम बहुल प्रांत (बंगाल और पंजाब) में आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया जाये।
- यह बहस चल ही रही थी कि उसी समय 1928 में आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन में हिन्दु महासभा के एम.आर.जयकर ने इस समझौते के लिए किये जा रहे प्रयासों की खुलेआम निंदा कर इस मुद्दे के समाधान की सारी संभावनाऐं समाप्त कर दीं।
- जब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ तो उस समय दोनों समुदायों के बीच संदेह व अविश्वास का माहौल बना हुआ था।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here